

श्रीमद्भागवतम्

(भगवत्-सन्देश)

अष्टम स्कन्ध

“ब्रह्माण्डीय सृष्टि का निवर्तन”

मूल संस्कृत पाठ, शब्दार्थ,

अनुवाद तथा विस्तृत तात्पर्य सहित

द्वारा

कृष्णकृपामूर्ति

श्री श्रीमद् ए. सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद

संस्थापकाचार्य : अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ

भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट

आमुख

प्रस्तावना

अध्याय एक

ब्रह्माण्ड के प्रशासक मनु

अध्याय का सारांश

ईश्वर के अवतार की पुष्टि कैसे की जाए ?

असली राष्ट्रीय नेताओं द्वारा इन्द्रियतृप्ति का परित्याग

पूर्ण साम्यवाद: हर वस्तु ब्रह्म की है

मानसिक चिन्तन द्वारा ईश्वर सीमित नहीं हो सकता

मानव समाज के परम शिक्षक

अध्याय दो

गजेन्द्र पर संकट

अध्याय का सारांश

क्षीरसागर की लहरों से पत्रे (मरकत) उत्पन्न होते हैं

त्रिकूट पर्वत का स्वर्गिक वातावरण

इन्द्रियतृप्ति में गजेन्द्र की तल्लीनता

घड़ियाल द्वारा गजेन्द्र का भ्रामक भोग विनष्ट

गजेन्द्र का परम नियन्ता को आत्मसमर्पण

अध्याय तीन

गजेन्द्र की समर्पण-स्तुति

अध्याय का सारांश

गजेन्द्र का पूर्व-जन्म के एक मंत्र का स्मरण करना

अचिन्त्य परम कलाकार

भक्तियोग: शुद्ध आध्यात्मिक कर्म

समस्त अध्यात्मवादियों के लिए एकमात्र आश्रय

कृष्ण जीव को हर इच्छित वस्तु प्रदान करते हैं

जीवन-संघर्ष का कारण: अज्ञान

भगवान् हरि द्वारा गजेन्द्र की रक्षा

अध्याय चार

गजेन्द्र का वैकुण्ठ गमन

अध्याय का सारांश

घड़ियाल के रूप में हूहू राजा का जीवन

गजेन्द्र द्वारा आध्यात्मिक शरीर की पुनः प्राप्ति

अध्याय पाँच

देवताओं की भगवान् से सुरक्षा याचना

अध्याय का सारांश

भगवान् के गुणों की गिनती असम्भव

दुर्वासा मुनि का देवताओं को शाप

श्वेतद्वीप—क्षीरसागर में भगवान् का आवास-स्थान

जन्म तथा मृत्यु का मानसिक चक्र

कृष्ण की माया

चन्द्रमा मरुस्थल क्यों नहीं है ?

बड़े-बड़े पण्डितों द्वारा इस नश्वर संसार का बहिष्कार

कृष्णभावनामृत से सबों की तुष्टि

अध्याय छह

देवताओं तथा असुरों द्वारा सन्धि की घोषणा

अध्याय का सारांश

भगवान् का निर्मल शारीरिक सौन्दर्य

भक्तियोग से ब्रह्म तक प्रत्यक्ष पहुँच

साँप तथा चूहे का राजनयिक तर्क

देवताओं तथा असुरों द्वारा मन्दराचल का उखाड़ा जाना

भगवान् द्वारा मन्दराचल का लाया जाना

अध्याय सात

शिवजी का विषपान द्वारा ब्रह्माण्ड की रक्षा करना

अध्याय का सारांश

असुरों का देवताओं से सदैव मतभेद रहना

कूर्म का प्राकट्य—कूर्मावतार

भगवान् अजित द्वारा क्षीरसागर का मंथन

देवताओं द्वारा शिवजी की स्तुति

अननुकरणीय शिवजी द्वारा विषपान

अध्याय आठ

क्षीरसागर का मंथन

अध्याय का सारांश

लक्ष्मीदेवी का प्राकट्य

लक्ष्मीदेवी द्वारा पति का चुनाव

धन्वन्तरि का अमृत पात्र सहित प्रकट होना

अभक्त की प्रथम चिन्ता

मोहिनी अवतार

अध्याय नौ

मोहिनी मूर्ति के रूप में भगवान् का अवतार

अध्याय का सारांश

मोहिनी के दिव्य सौन्दर्य से असुरगण का मुग्ध होना

मोहिनी रूप भगवान् द्वारा नारी-शोषण की व्याख्या

भौतिकतावादी आशाओं तथा कार्यों का सदैव निष्फल होना

अध्याय दस

देवताओं तथा असुरों के बीच युद्ध

अध्याय का सारांश

विरोधी सेनाओं का विवरण

चार दिन में चन्द्रमा तक यात्रा असम्भव
असुरों द्वारा मायावी युद्ध का आश्रय लेना
विष्णु द्वारा देवताओं की मायावी चालें ध्वस्त

अध्याय ग्यारह

देवराज इन्द्र द्वारा असुरों का संहार

अध्याय का सारांश
यांत्रिक अन्तरिक्ष यात्रा की निरर्थकता
रहस्यमय असुर नमुचि
फेन से इन्द्र द्वारा नमुचि का वध

अध्याय बारह

मोहिनी-मूर्ति अवतार पर शिवजी का मोहित होना

अध्याय का सारांश
समस्त नियन्ताओं के परम नियन्ता
हर वस्तु का भगवान् श्रीकृष्ण से विस्तार
शिवजी द्वारा भगवान् के स्त्री-रूप को देखने की माँग
भगवान् विष्णु का मोहिनी-मूर्ति के रूप में प्रकट होना
नर तथा मादा के आकर्षण से जीवन की भ्रान्तियों में वृद्धि
भगवान् की अन्तरंगा शक्ति से शिव द्वारा अपनी पराजय स्वीकार
कृष्ण के भक्त कभी परास्त नहीं होते

अध्याय तेरह

भावी मनुओं का वर्णन

अध्याय का सारांश
वैदिक ग्रंथ भविष्यप्रद्वष्टा होते हैं

अध्याय चौदह

विश्व व्यवस्था की पद्धति

अध्याय का सारांश

मानव का शाश्वत व्यावसायिक धर्म

दार्शनिक असफल क्यों ?

अध्याय पन्द्रह

बलि महाराज द्वारा स्वर्गलोकों पर विजय

अध्याय का सारांश

स्वर्गलोकों की राजधानी इन्द्रपुरी का वर्णन

आत्म-साक्षात्कार का प्रवेश-द्वार: गुरु को प्रसन्न करना

अध्याय सोलह

पयोव्रत पूजा विधि को सम्पन्न करना

अध्याय का सारांश

दिव्य गृहस्थ जीवन

परम नियंता द्वारा अपने भक्तों का पक्ष लेना

आत्मा शरीर से पूर्णतः भिन्न

गुरु बनाने की आवश्यकता

पयोव्रत भक्ति विधि की व्याख्या

“अनेक मार्ग, एक ही फल” दर्शन मिथ्या क्यों ?

अध्याय सत्रह

भगवान् द्वारा अदिति-पुत्र बनना स्वीकार

अध्याय का सारांश

भगवान् का अदिति के समक्ष प्रकट होना

माया को लौघना

जीवन दो स्रावों (स्खलनों) का प्रतिफल नहीं

नित्यकाल की तरंगें

अध्याय अठारह

भगवान् वामनदेव का अवतार

अध्याय का सारांश

भगवान् वामन देव का दिव्य जन्म

वैदिक खगोल-विज्ञान: चन्द्र विषयक सत्य

कृष्ण से लाखों अवतार उद्भूत

बलि महाराज द्वारा भगवान् का प्रत्यक्ष अभिनन्दन

अध्याय उन्नीस

भगवान् वामनदेव द्वारा बलि महाराज से दान की भिक्षा माँगना

अध्याय का सारांश

भगवान् द्वारा बलि की उदारता की प्रशंसा

‘ईश्वर मृत है’—मनगढ़न्त कल्पना

पृथ्वी के सर्वशक्तिमान धारणकर्ता भगवान् श्रीकृष्ण

अन्य नश्वर शरीर कैसे प्राप्त करें ?

कृष्ण भक्त पलायनवादी नहीं

शरीर: अधमतम अवस्था का सर्वोत्तम उपयोग करना

निर्धनता का रामबाण हल

अध्याय बीस

बलि महाराज द्वारा ब्रह्माण्ड समर्पण

अध्याय का सारांश

बलि महाराज द्वारा अपने झूठे गुरु का परित्याग

असत्य : पृथ्वी पर एक भारी बोझ

जीवन का दुर्लभ अवसर—दिव्य दान

बलि महाराज के झूठे गुरु द्वारा उन्हें शाप

भगवान् द्वारा शरीर का विस्तार और ब्रह्माण्ड का घेराव

भगवान् के लम्बे पदचाप से ब्रह्माण्ड के आवरण का भेदन

अध्याय इक्कीस

भगवान् द्वारा बलि महाराज का बन्दी बनाया जाना

अध्याय का सारांश

भगवान् वामनदेव द्वारा अपना आदि रूप धारण किया जाना

बलि के असुर अनुयायियों द्वारा भगवान् पर आक्रमण

बलि की सहिष्णुता, ब्रह्माण्ड के लिए शिक्षा

भक्तगण किसी भी भौतिक दशा से परे

अध्याय बाईस

बलि महाराज द्वारा आत्म-समर्पण

अध्याय का सारांश

भगवान् का बलि के शिर पर अन्तिम पदचाप रखना

मूल्यवान् जीवनकाल का अपव्यय

अत्यन्त प्रिय भक्त प्रह्लाद महाराज का आगमन

संसार की अव्यवस्था: परम स्वामी की अवज्ञा

मनुष्य जीवन की प्राप्ति अत्यन्त दुर्लभ

बलि महाराज को भगवान् के शाश्वत वर की प्राप्ति

अध्याय तेईस

देवताओं द्वारा स्वर्गलोकों की पुनर्प्राप्ति

अध्याय का सारांश

भक्तगण आनन्द मनाते हैं और अभक्त-गण कष्ट भोगते हैं : क्यों ?

हरे कृष्ण मंत्र का कीर्तन

परमेश्वर की अवज्ञा से समय, शक्ति तथा धन का अपव्यय

अध्याय चौबीस

भगवान् का मत्स्यावतार

अध्याय का सारांश

भगवान् ने मत्स्य-रूप क्यों धारण किया ?

प्रकृति के नियमों का परमेश्वर पर कोई प्रभाव नहीं

भगवान् के प्रति अनजाने में की गई सेवा भी व्यर्थ नहीं जाती

अज्ञानी पुरुष देवताओं की पूजा करते हैं

दिव्य ज्ञान आत्म-समर्पण पर आधारित

श्रीकृष्ण : परम आध्यात्मिक गुरु

भौतिकतावादी गुरुओं द्वारा मूर्ख शिष्यों का ठगा जाना

प्रामाणिक गुरु की खोज

लेखक-परिचय